धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

अंक -4

वर्ष - 1

चहकती चेतना

सितम्बर-नवम्बर 2007

कहानी,
कविता,
गीत,
पहेली,
खेल,

माथापच्ची,
चित्रकथायें,
ड्राईंग,
प्रेरक प्रसंग

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन (रजि.), जबलपुर (म.प्र.)

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

समझ

एक राजा का पुत्र हमेशा गरीब बच्चों के साथ खेलता रहता था। राजा ने उसे बहुत समझाया कि अपनी बराबरी के लड़कों के साथ रहा करो। ये गरीब लोग अच्छे नहीं होते। राजा ने अपने पुत्र की दोस्ती गरीब बच्चों से तोड़ने के लिए बहुत उपाय किये परंतु सफल नहीं हुआ। राजा ने गुस्से में पुत्र को फांसी चढ़ाने का आदेश दे दिया। तब पुत्र बोला कि आप मुझे कुछ समय दें उसके बाद आपके मन में जो आये वह करना। राजा ने स्वीकार कर लिया। राजा का पुत्र कुछ दिन बाद तीन पेटी लेकर आया। इसमें एक सोने की, दूसरी चांदी की और तीसरी लकड़ी की थी। पुत्र ने राजा से पूछा कि बताइये पिताजी कि इनमें सबसे अच्छी पेटी कौन सी है ? राजा बोला - सबसे अच्छी पेटी सोने की है, चांदी की दूसरे नंबर पर और तीसरी लकड़ी की पेटी सबसे खराब। फिर पुत्र ने तीनों पेटियां खोली। सोने की पेटी में सांप बिच्छू थे, दूसरी चांदी की पेटी में कंकड़ पत्थर और तीसरी लकड़ी की पेटी में हीरे-मोती थे। यह सब देखकर राजा को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। यह देखकर पुत्र बोला - पिताजी! ऊपर की चमक देखकर भ्रम मत करिये कि धनवान व्यक्ति ही अच्छे होते हैं और गरीब व्यक्ति खराब। यह सुनकर राजा ने अपने पुत्र को क्षमा कर दिया और अपनी गलती स्वीकार ली।

शिक्षा

पिता पुत्र दोनों एक आम के वृक्ष के नीचे से जा रहे थे। पुत्र ने वृक्ष पर पत्थर फेंका तो वृक्ष से एक पका आम नीचे गिर पड़ा। यह देखकर पुत्र ने कहा कि बिना ठोकर खाये कोई कुछ नहीं देता। तो पिता ने कहा - बेटा ! ऐसा क्यों नही सोचते कि सज्जन पुरुष चोट खाने पर भी उपकार ही करते हैं।

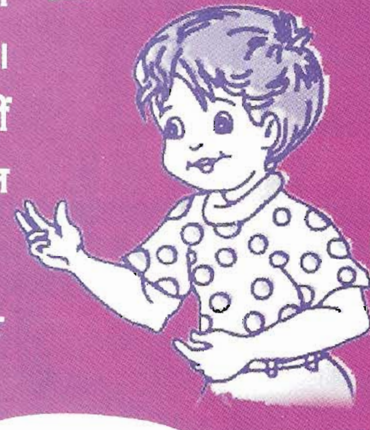

संकलन - पं. राजेन्द्र कुमार जैन, जबलपुर

अहिंसा परमो धर्मः

चेतना और चेतन दो भाई बहन थे। दोनों ही बहुत होनहार बच्चे थे। प्रतिदिन सुबह उठकर जिन दर्शन को जाना, शाम को पाठशाला जाना और रात में अपनी दादी से कहानियाँ सुनना, बाकी समय अपने विद्यालय की पढ़ाई में मन लगाना, यही उनकी दिनचर्या थी।

एक दिन की बात है। वे दोनों रात में अपनी दादी से कहानी सुनने के लिए बैठे। दादी ने उन दोनों को सती अनंगधरा की कहानी सुनाई कि किस तरह अनंगधरा को अजगर ने आधा निगल लिया था और जब अनंगधरा के परिवार वाले अजगर को मारने लगे तब अनंगधरा ने उन्हें मना किया कि इसे मत मारो। यह पंचेन्द्रिय पर्याय बहुत मुश्किल से मिलती है। जब हम इन्हें पैदा नहीं कर सकते हैं तो हमें इन्हें मारने का भी अधिकार नहीं है।

कहानी सुनकर वे दोनों भाई-बहिन दादी को ''जय-जिनेन्द्र'' बोलकर अपने कमरे में सोने जा रहे थे तभी चेतन ने देखा कि एक चूहा मुँह में छोटे कीड़े को दबाया हुआ भाग रहा है और उसके पीछे एक बिल्ली उसको पकड़ने के लिये भाग रही है। चेतन ने एक डंडा उठाया और बिल्ली को मारने के लिये दौड़ा। तभी उसकी बहन चेतना चिल्लाई - ''बिल्ली को मत मारो''। अभी दादी ने हमें कहानी सुनाई थी ना कि किसी भी जीव को मारना नहीं चाहिए। उसने अपने भाई को समझाया कि तुम उसे मारोगे तो तुम्हें नरक में जाना पड़ेगा। वहाँ तुम्हें भी ऐसे ही मार पड़ेगी और हम हमेशा यह नारा लगाते हैं कि ''अहिंसा परमो धर्मः''।

(अहिंसा ही हमारा परम धर्म है।)

वर्णित पाटनी गोलगंज, छिन्दवाड़ा

ऐसा कभी मत करना

बुरी आदतों में मत पड़ना, बिगड़ों की संगत न करना।
गंदी पुस्तक कभी न पढ़ना, गलत राह पर कभी न बढ़ना ॥ 1 ॥

खोटी फिल्मों से तुम डरना, धोखा लालच कभी न करना।
बड़ों का अपमान न करना, गंदी हंसी-मजाक न करना ॥ 2 ॥

जीव जन्तुओं को नहीं सताना, भोले लोगों को मत छलना।
बच्चो आलस कभी न करना, झगड़ों में तुम कभी न जाना ॥ 3 ॥

यहाँ वहाँ कचरा मत करना, बिजली जल बरबाद न करना।
कपड़ों को मत मैला करना, कभी कहीं पर शोर न करना ॥ 4 ॥

कभी किसी की नकल न करना, सेवा में कभी मना न करना।
मैला हो जिससे जीवन, ऐसे काम कभी न करना ॥ 5 ॥

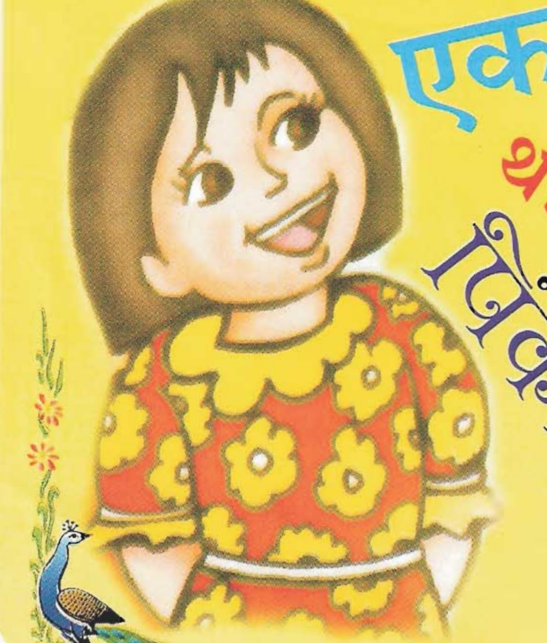

एक थी पिंकी

एक थी पिंकी न्यारी, सबको लगती न्यारी।
दादा को पानी देती, दादी की सेवा करती ॥
सदा समय पर पढ़ती, काम में हाथ बटाती।
उसे देख सब होते खुश, पैसा पाकर वह भी खुश ॥
पिंकी गई पाठशाला, ली बालबोध पाठमाला।
पिंकी गई फिर मंदिर, स्तुति पढ़ी इक सुंदर ॥
हाथ में अरघ धरके, प्रभु का दर्शन करके।
जिन दर्शन यों कीना, सम्यग्दर्शन लीना ॥

ब्र. सुमतप्रकाश जी, खनियांधाना

हमारे आराध्य नवदेव

इसके पहले के अंकों में आप अरहंत, सिद्ध, आचार्य परमेष्ठी के बारे में पढ़ चुके हैं।

अरिहंत

जिनवाणी

सिद्ध

जिनबिम्ब

आचार्य

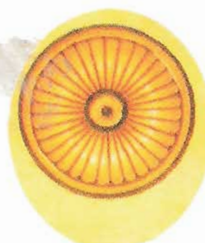

जिनधर्म

साधु

जिनालय

4. उपाध्याय परमेष्ठी

हमारे पंचपरमेष्ठी भगवंतों में से चौथे परमेष्ठी हैं उपाध्याय परमेष्ठी। मुनि संघ में आत्म ध्यान और आगम ज्ञानपूर्वक जो विशेष ज्ञान के धारी होते हैं, शास्त्रों के जानकर होते हैं और संघ के अन्य साधुओं को पढ़ाते हैं वे उपाध्याय परमेष्ठी कहलाते हैं।

An Upadhaya is the reader of holy scriptures. He himself learns and teaches other monks. He is a teacher of ethico-spiritual values.

सीख

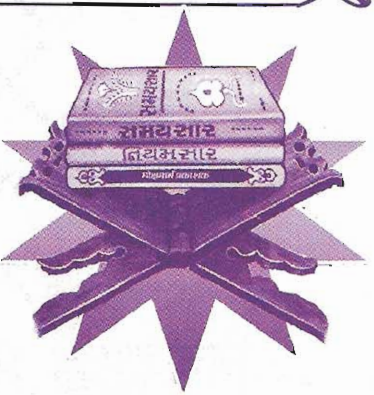

- ☆ शास्त्र स्वाध्याय प्रारंभ होने से पूर्व स्वाध्याय कक्ष में आ जाना चाहिये।
- ☆ शास्त्र को पैर पर रखकर पढ़ना नहीं चाहिये।
- ☆ शास्त्र के पन्ने हाथ में थूक लगाकर पलटना नहीं।
- ☆ शास्त्र को नाभि के नीचे के अंगों में स्पर्श करना नहीं।
- ☆ शास्त्र सभा में बाद में आकर बैठना नहीं।
- ☆ शास्त्र सभा में बीच में उठकर जाना नहीं।
- ☆ शास्त्र सभा में टिककर बैठना नहीं।
- ☆ शास्त्र सभा में आगे पैर करके बैठना नहीं।
- ☆ शास्त्र पढ़ते समय हंसी मजाक करना नहीं।
- ☆ शास्त्र सभा में इधर उधर की बातें करना नहीं।
- ☆ शास्त्र की पूर्ण रूप से विनय करना।
- ☆ शास्त्र सभा में इतने छोटे बच्चों को नहीं लाना जिन्हें शुद्धि अशुद्धि का ज्ञान नहीं।
- ☆ शास्त्र सभा में मोबाईल आदि नहीं लाना चाहिये।

नन्हें कवि प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता के अंतर्गत आप यह चित्र देखें और एक छोटी सी कविता की चार पक्तियाँ बनाकर भेजें। ध्यान रहे कविता आपके द्वारा स्वयं तैयार की जाना चाहिये। सर्वश्रेष्ठ तीन कविताओं को पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा एवं पुरस्कार भी भेजा जायेगा।

कविता भेजने की अंतिम तिथि

10 अक्टूबर 2007

पता – सर्वोदय, 702, जैन टेलीकाम फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.)

हमारे तीर्थक्षेत्र

श्रवणबेलगोला

कर्नाटक के हासन जिले में चन्द्रराय पट्टन तहसील में श्रवणबेलगोला नामक अतिशय क्षेत्र है। लगभग 1000 वर्ष पूर्व मंत्री चामुण्डराय ने आचार्य नेमिचंद्र के सान्निध्य में इन्द्रगिरी पर्वत पर भगवान बाहुबली की अद्भुत विशाल प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई थी। यह प्रतिमा लगभग 18 मीटर (58 फुट) ऊँची खड्गासन मुद्रा में है। इस प्रतिमा को अरिष्टनेमि नाम के कलाकार ने बनाया था। इस विशाल प्रतिमा की सुन्दरता अलौकिक है। इस प्रतिमा का प्रत्येक 12 वर्ष में महामस्तकाभिषेक किया जाता है। इस प्रतिमा की विशेषता यह है कि 58 फुट ऊँचाई वाली और खुले स्थान पर विराजमान होने पर भी इसकी छाया नहीं पड़ती और इस पर पक्षी नहीं बैठते।

श्रवणबेलगोला के चन्द्रगिरी पर्वत पर आचार्य धरसेन ने मुनि भूतबलि और मुनि पुष्पदंत को शिक्षा प्रदान की और जिन्होंने षट्खण्डागम नाम के महान ग्रंथ की रचना की।

श्रवणबेलगोला से मैसूर 85 किमी., बैंगलोर 150 किमी., धर्मस्थल 180 किमी., वेणूर 180 किमी., मूडबिद्रि 200 किमी. और कारकल 225 किमी. है।

दिये हुये चित्र के टुकड़ों के नं. को खाली खंडों में लिखकर चित्र को पूर्ण करें।

Complete the picture by pieces of picture.

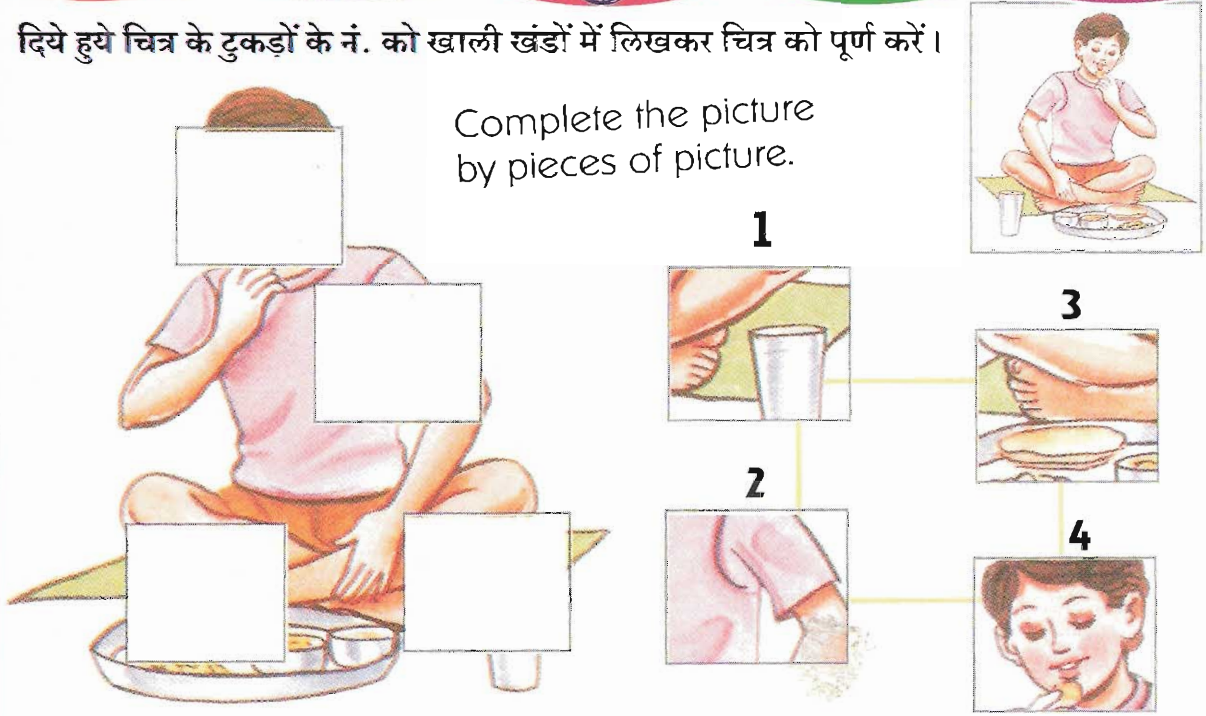

चित्र में रंग भरिये

Colour the picture

करनी का फल......

कविता

इस जनम में नहीं मिले पर भव में मिलता है।
अपनी-अपनी करनी का फल सबको मिलता है ॥
एक फूल वह है जो माथे पर सजता है,
एक फूल वह है जो अर्थी पर चढ़ता है।
फूल दोनों एक ही उपवन में खिलते हैं,
अपनी-अपनी करनी का फल सबको मिलता है।
एक पत्थर वह है जिसकी मूरत बनती है,
एक पत्थर वह है जो सड़कों पर बिछता है।
पत्थर दोनों एक ही खान से निकले हैं।
अपनी अपनी करनी का फल सबको मिलता है।
एक भाई वो जो भोगों में रमता है,
एक भाई वो है जो मुनिराज बनता है।
भाई दोनों एक ही माता से जन्मे हैं,
अपनी-अपनी करनी का फल सबको मिलता है।

अपना काम

कब चींटी किससे कहती है, दाना पानी लाओ।
कब चिड़िया किससे कहती है, अनाज मुझे दे जाओ।
कहाँ नौकरी अजगर करता, किसका भरता पानी।
बादल कब किससे कहता है, ला दो भरकर पानी।
कीट पतंगे,जंतु अनगिनत, किस पर निर्भर रहते।
अपना काम सभी हैं करते, खुद पर निर्भर रहते ॥

ऐसे मत बनो..

इतने नरम मत बनो कि लोग तुम्हें खा जायें।
इतने कठोर भी मत बनो कि लोग तुम्हें छू न सकें।
इतने गंभीर भी मत बनो कि लोग तुमसे ऊब जायें।
इतने छिछले भी मत बनो कि लोग तुम्हें मानें ही नहीं।
इतने जटिल भी मत बनो कि लोगों में मिल भी न सको।
इतने मंहगे भी मत बनो कि लोग तुम्हें बुला न सकें।
इतने सस्ते भी मत बनो कि लोग तुम्हें नचाते रहें।

-श्रीमति रुचि 'अनेकांत' जैन महरौली, दिल्ली

आओ सीखें

1. आत्मा एक होती है।
2. जीव दो होते हैं।
3. रत्न तीन होते हैं।
4. गतियाँ चार होती हैं।
5. पाप पाँच होते हैं।
6. द्रव्य छः होते हैं।
7. तत्त्व सात होते हैं।
8. कर्म आठ होते हैं।
9. पदार्थ नौ होते हैं।
10. धर्म दस होते हैं।
11. प्रतिमा ग्यारह होती हैं।
12. भावना बारह होती हैं।
13. चारित्र तेरह होते हैं।
14. गुणस्थान चौदह होते हैं।
15. प्रमाद 15 होते हैं।
16. कषाय सोलह होती हैं।
17. मरण सत्तरह होते हैं।
18. दोष अठारह होते हैं।
19. जीव समास उन्नीस होते हैं।
20. प्ररूणता बीस होती हैं।
21. औदयिक भाव इक्कीस होते हैं।
22. परीषह बाईस होते हैं।
23. वर्गणा तेईस होती हैं।
24. तीर्थंकर चौबीस होते हैं।

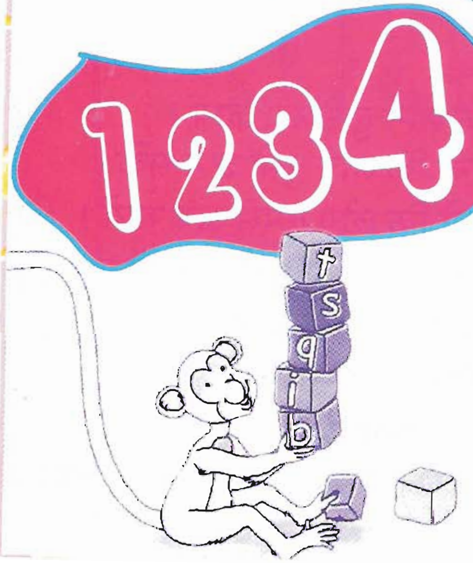

1. क्या कहता नंबर वन – जैन धर्म है सबसे एवन
2. क्या कहता है नंबर टू – मोक्षमार्ग में चल पड़ तू।
3. क्या कहता है नंबर थ्री – हो जा झंझट से अब फ्री।
4. क्या कहता है नंबर फोर – शोर करो ना बनना चोर।
5. क्या कहता है नंबर फाइव – राग-द्वेष को करना गायब।
6. क्या कहता है नबंर सिक्स – जैन धर्म में सब हों फिक्स।
7. क्या कहता है नंबर सेवन – पंच प्रभु की करना पूजन।
8. क्या कहता है नंबर एट – कभी न तुम पीना सिगरेट।
9. क्या कहता है नंबर नाइन – जैनी बच्चे सबसे फाइन।
10. क्या कहता है नंबर टेन – हमको बनना सच्चे जैन।

शीर्षक बताईये

प्रस्तुत कहानी का उपयुक्त शीर्षक अधिकतम चार शब्दों में लिखकर हमें भेजें। उचित शीर्षक वाले बालक को पुरस्कृत किया जायेगा।

शीर्षक भेजने की अंतिम तिथि –25 अक्टूबर 2007

एक गाँव में एक किसान रहता था, उसका नाम था शेरसिंह। वह शेर जैसा भयंकर और अभिमानी था। वह छोटी-सी बातों पर लोगों से लड़ बैठता था उसके इसी स्वभाव के कारण गांव के लोग उससे दूर ही रहते थे। उसी गाँव में एक दयाराम नाम का किसान भी रहता था। वह बहुत सीधा व भला आदमी था। सभी से बहुत नम्रता व स्नेह से बात करता था इसलिये सभी लोग उससे बहुत प्रेम करते थे।

एक बार किसी बात को लेकर गाँव के लोगों ने दयाराम से कहा कि तुम भूलकर भी शेरसिंह के घर मत ज़ाना, वह बड़ा ही झगड़ालू है। तब दया राम हंसकर बोला- शेर सिंह ने मुझसे झगड़ा किया तो मैं उसको हरा दूंगा। उसकी यह बात किसी ने जाकर शेरसिंह से कह दी तो गुस्से से आग बबूला हो गया उसने दयाराम से बदला लेने का विचार किया और दयाराम के खेत में अपने बैल छोड़ आया। बैलों ने दयाराम का बहुत सा अनाज खा लिया परन्तु दयाराम ने चुपचाप से बैलों को हांक दिया। फिर एक दिन शेरसिंह ने दयाराम के खेत से जाने वाली नाली को तोड़ दिया। पर इस पर भी दयाराम ने कुछ न कहकर चुपचाप अपनी नाली सुधार ली। शेरसिंह बारबार दयाराम को हानि पहुंचाकर किसी न किसी तरह झगड़ने के अवसर की तलाश में रहता था। लेकिन दयाराम ने शेरसिंह को लड़ाई करने का कोई मौका ही नहीं दिया।

एक दिन दयाराम के यहाँ उसके रिश्तेदार ने मीठे फल भेजे। दयाराम ने सभी किसानों के घर एक-एक फल भेज दिया लेकिन शेरसिंह ने यह कहकर फल लौटा दिया कि मैं भिखारी नहीं हूँ। मैं दूसरों का दान नहीं लेता।

एक बार की बात है बरसात का समय था और तेज बारिश हो रही थी। तभी शेरसिंह एक गाड़ी अनाज की भर दूसरे गाँव से आ रहा था। रास्ते में नाले के कीचड़ में उसकी गाड़ी फँस गई। शेरसिंह के बैल दुबले थे। वे गाड़ी को कीचड़ से निकाल नहीं सके। जब गाँव में इस बात की खबर पहुँची तो सब लोग बोले - 'शेरसिंह बड़ा दुष्ट है उसे रात भर नाले में पड़े रहने दो।' लेकिन दयाराम ने अपने बलवान बैलों को साथ लेकर नाले की ओर चल दिया। लोगों ने उसे रोका और कहा - 'दयाराम! शेरसिंह ने तुम्हारी बहुत हानि की है। तुम तो कहते थे कि मुझसे लड़ेगा तो मैं उसे हरा दूंगा, मार ही डालूंगा। फिर तुम उसकी मदद करने क्यों जा रहे हो ?

दयाराम बोला - मैं सचमुच आज उसे मार ही डालूंगा। तुम लोग सुबह उसे देखना। जब शेरसिंह ने दयाराम को आते देखा तो गर्व से बोला- ''तुम अपने बैल लेकर लौट जाओ, मुझे किसी की सहायता नहीं चाहिये।'' दयाराम ने कहा - ''तुम्हारा मन करें तो मुझे गाली दो, मन में आये तो मुझे मारो। पर इस समय तुम संकट में हो। रात होने वाली है। मैं तुम्हारी बात इस समय नहीं सुनूँगा।''

दयाराम ने शेरसिंह के बैलों को खोलकर अपने मजबूत बैलों की सहायता से शेरसिंह की गाड़ी को कीचड़ ने बाहर निकाल दिया। शेरसिंह गाड़ी लेकर घर आ गया। उसका दुष्ट स्वभाव उसी दिन से बदल गया। वह कहता था - ''दयाराम ने अपने उपकार से मुझे मार दिया।'' अब मैं वह अंहकारी शेरसिंह कहाँ रहा। अब वह सबसे नम्रता पूर्वक बोलता और प्रेम व्यवहार करने लगा। अब बच्चो ! आप ही कहिये। बुराई को भलाई से जीतने की इस कला को आप क्या नाम देगें ?

प्रेरक प्रसंग

एक दिन नामू कुल्हाड़ी से अपना पैर छील रहा था। माँ ने देखा तो कहने लगी - बेटा ! अपना पैर क्यों छील रहा है ? पागल हो गया है क्या? नामू कहने लगा कि माँ ! मैं देख रहा था कि चमड़ा छीलने से कुछ दुख होता है कि नहीं ? माँ ने पूछा कि तू ऐसा क्यों कर रहा है ? नामू बोला - माँ आपने कल पेड़ की छाल मंगाई थी, उसे छीलते समय क्या उसे दुख नहीं हुआ होगा ? यह सुनकर माँ ने बच्चे को दुलारकर छाती से लगा लिया। यही नामू बड़ा होकर महान संत हुआ।

कोलकाता के शांति निकेतन में एक कुत्ता बहुत बीमार था। उसे बहुत तकलीफ हो रही थी। उसे छटपटाते देखकर एक प्रोफेसर ने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर से कहा-गुरुदेव ! इसका कष्ट नहीं देखा जाता, इसे तो गोली मार देना चाहिए, जिससे इसे दुख से मुक्ति मिल जायेगी। गुरुदेव बोले - भाई ! यदि इस कुत्ते की जगह हमारे या तुम्हारे घर का कोई सदस्य बीमार हो और दर्द से चिल्ला रहा हो तो क्या उसे गोली मारकर ही दुख से मुक्ति दिलाओगे ? यह सुनकर प्रोफेसर चुपचाप गुरुदेव को देखता रह गया।

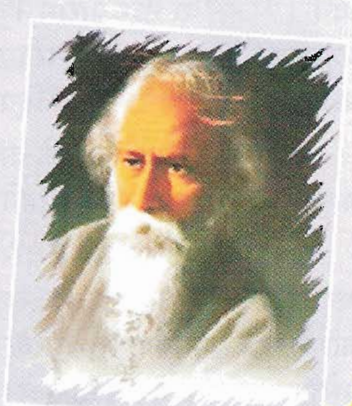

एक बार स्वामी विवेकानंद काशी जा रहे थे। पास में वृक्ष पर बंदर बैठे थे। बंदरों ने अनायास इनका रास्ता रोक लिया। स्वामी जी असमंजस में पड़ गये। बन्दर उनको बार-बार काटने के लिये दौड़ रहे थे। स्वामी को घबराया हुआ देखकर एक आदमी ने आवाज लगाकर कहा - स्वामी जी ! आप उनके पास में खड़े हो जाइये। स्वामीजी जैसे ही बंदरो के सामने खड़े हुये वैसे ही बंदर शांत हो गये और कुछ देर बाद भाग गये। इस घटना से विवेकानंद को एक शिक्षा प्राप्त हुई कि संकटों का मुकाबला साहस से करना चाहिए।

कु. श्वेता जैन, कटनी

पर्वाधिराज पर्यूर्षण पर्व

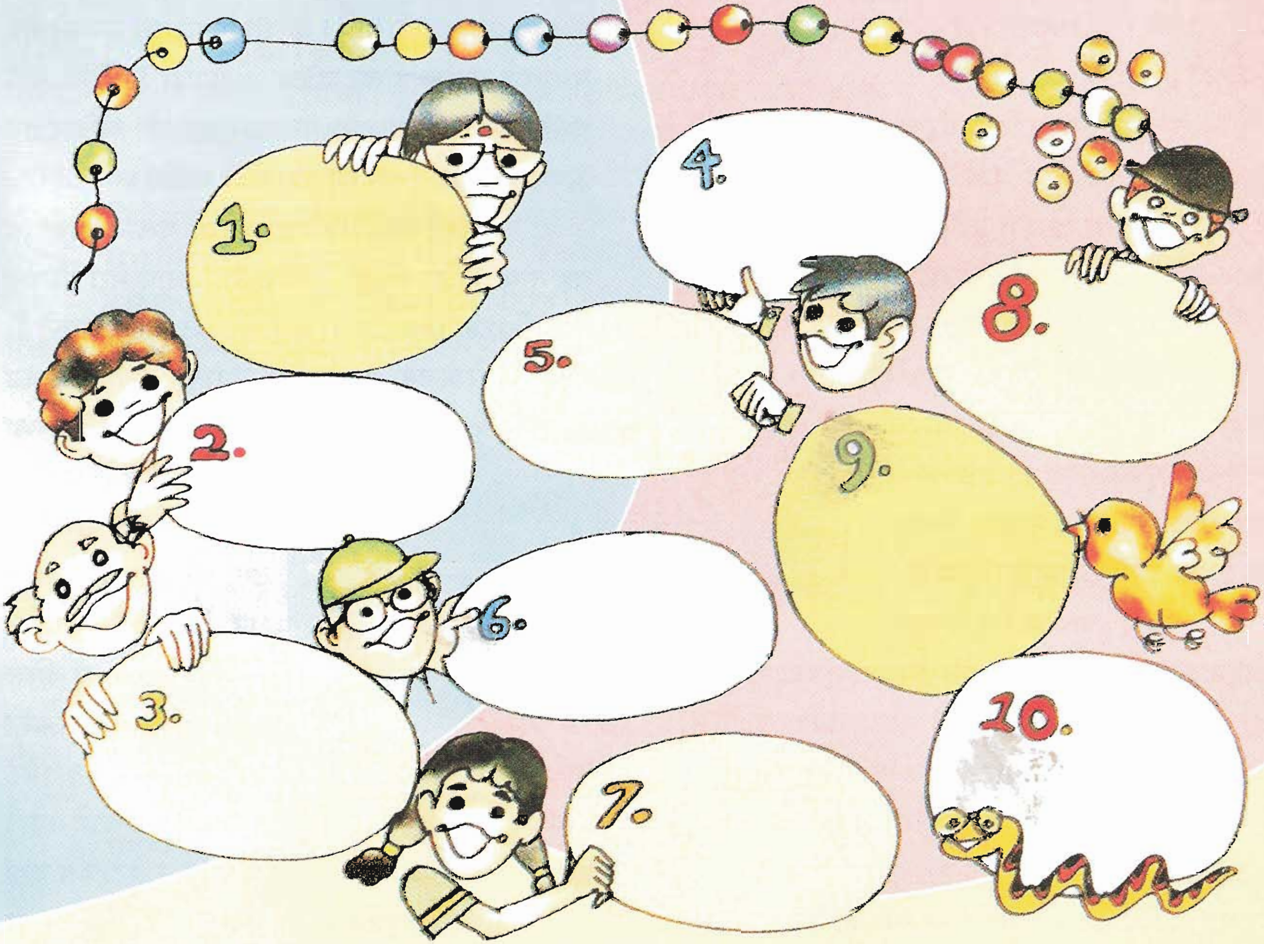

प्यारे बच्चो ! जैसा आप सभी को मालूम ही होगा कि अपने सबसे महत्वपूर्ण दशलक्षण पर्व बस प्रारंभ ही होने वाले है। 10 दिनों तक मनाया जाने वाला यह धर्माराधना का पर्व आप सभी भी अत्यंत उत्साह, संयम व आत्मकल्याण की भावना से मनाते होंगे। चलों देखें आपको उन 10 धर्मो के नाम मालूम है कि नहीं..... यदि आपको ये नाम पता है तो ऊपर दिये गये 10 गोल बाक्सों में वह नाम जल्दी से लिख करअपने पाठशाला के पंडितजी को दिखाईयेगा। साथ ही आपने इस बार का पयूर्षण पर्व कैसा मनाया, ज्ञान की क्या-क्या नई बातें सीखी आदि अपने अनुभव पत्र में लिखकर हमें भेजें। सबसे अच्छे चुने गये पत्रों को 'चहकती चेतना' के अगले अंक में प्रकाशित किया जावेगा। हमारा पता पत्रिका के कवर पेज के अंदर तरफ दिया हुआ है। तो आपके पत्रों को इंतजार रहेगा ......

प

धर्म का मूल्य

प्राचीन समय की बात है। भारत के उज्जैन नगर में विश्वधंर राजा राज्य करते थे। उनके राज्य में गुणपाल नाम का सेठ अपनी धनश्री नाम की पत्नी के साथ रहते थे। उनकी अत्यन्त सुन्दर और बुद्धिमान बंधुश्री नाम की पुत्री थी। पूरे परिवार की महान जैन धर्म में बहुत श्रद्धा थी।

एक दिन राजा विश्वधंर जब वन में शिकार के लिये जा रहा था, तब मार्ग में उसने बाग में अपनी सहेलियों के साथ खेलती हुई सेठ की पुत्री बंधुश्री को देखा और सोचने लगा कि इससे विवाह के बिना मेरा जीवन बेकार है। उसने राजमहल आकर अपना दूत का बुलाकर कहा - तुम सेठ गुणपाल के घर जाओ और कहना- राजा आपकी पुत्री बंधुश्री के साथ विवाह करना चाहते है। अतः राजा ने शीघ्र विवाह की तैयारी करने का आदेश दिया है।

दूत ने गुणपाल सेठ के यहाँ जाकर कहा - ''सेठ जी अत्यन्त प्रसन्नता की बात है। राजा विश्वधंर आपकी पुत्री से विवाह करना चाहते है। आपकी पुत्री देश की पटरानी बनेगी, आपको राजा जैसा दामाद मिलेगा।'' गुणपाल सेठ दूत का संदेश सुनकर विचार करने लगा कि मेरी पुत्री ने सदा जैन धर्म का पालन किया है और राजा जैन धर्म को नहीं मानता। मैं अपनी पुत्री का विवाह राजा से नहीं करुँगा। विधर्मी को कन्या देना महापाप है, इसलिए मैं विधर्मी राजा को अपनी कन्या नहीं दूँगा। सांसारिक सुख के लिये धर्म को छोड़ना महापाप है।

सेठ ने अपनी पत्नी का मन जानने के लिये कहा कि सुनो धनश्री! राजा विश्वधंर हमारी पुत्री बंधुश्री से विवाह करना चाहते हैं - यह अपने लिये गौरव की बात है। अपनी पुत्री पटरानी बनेगी। अतः हमें पुत्री के विवाह की शीघ्र तैयारी प्रारंभ कर देना चाहिए। यह सुनकर धनश्री बोली - हे स्वामी! आपको क्या हो गया है? जैन धर्म को न मानने वाले राजा से मैं अपनी पुत्री का विवाह कभी नहीं करुँगी, पागल हाथी के पैर के नीचे कुचलकर मर जाना अच्छा है परन्तु विधर्मी से अपनी पुत्री का विवाह करना ठीक नहीं। धनश्री के विचार सुनकर सेठ गुणपाल प्रसन्न होकर बोला - धनश्री! मैं भी यही चाहता हूँ, मैं तो तुम्हारा मन जान रहा था लेकिन हमें अपनी पुत्री के विचार भी जान लेना चाहिए।

यह सोचकर सेठ ने बंधुश्री को बुलाकर पूछा तो वह दुखी होकर बोली - पिताजी! आप मेरा विवाह विधर्मी राजा से करके मेरे धर्म को नष्ट करना चाहते हैं। अग्नि से जलना श्रेष्ठ है, विष से मृत्यु हो जाना अच्छा है लेकिन जैन धर्म रहित जीवन अच्छा नहीं है। चेलना को विधर्मी से विवाह करके जितना दुख भोगना पड़ा था। धन वैभव तो सामान्य पुण्य के उदय से मिल जायेगा परंतु जैन धर्म अनंत पुण्यों के फल से मिलता है। पुत्री के विचार सुनकर सेठ बोला - पुत्री! तुम जैसी पुत्री को पाकर मैं धन्य हो गया। हम तो तुम्हारी परीक्षा ले रहे थे। लेकिन बेटी हम यहाँ रहेंगे तो राजा बलपूर्वक विवाह करने का प्रयास करेगा इसलिये हमें यह नगर छोड़ना होगा। इस प्रकार विचार कर सेठ गुणपाल अपने परिवार को लेकर 1 अरब आठ करोड़ की सम्पत्ति छोड़कर चुपचाप चले गये।

जब राजा को यह पता चला तो उसने सोचा कि उस धर्मात्मा ने सारी संपदा छोड़ना मंजूर किया लेकिन मुझ जैसे पापी से अपनी बेटी का विवाह करना मंजूर नहीं किया। यह सोचकर राजा ने पाप कार्य छोड़कर दिगम्बर जैन धर्म को अपना लिया।

बोधिसमाधि विधान से साभार

अब नहीं फोड़ूँगा

उत्सव- अरे सम्यक् भाई ! सुबह-सुबह कहाँ चल दिये ?

सम्यक्- क्या बताऊँ उत्सव ! मेरा बेटा दीप कल से बाजार से पटाखा लाने के लिये जिद कर रहा है। कल शाम से उसने भोजन भी नहीं किया।

उत्सव - अरे यह क्या बात हुई सम्यक् ! तुमने समझाया नहीं.......

सम्यक्- (बीच में टोककर) अरे यार ! कितना समझाया लेकिन मानता ही नहीं।

उत्सव - तो फिर तुमने क्या सोचा ? तुम इतने समझदार होकर भी उसे पटाखे लाकर दोगे ?

सम्यक्- तो फिर क्या करूँ ? मन तो नहीं मानता लेकिन सम्यक् भोजन ही नहीं कर रहा।

उत्सव - आजकल के बच्चे तो बस ! इनकी सारी इच्छाएँ पूरी करो और जब बड़े हो जायेंगे तो कहेंगे आपने हमारे लिये क्या किया ? तुम रुको मैं समझाकर देखता हूँ।

उत्सव- (घर पहुँचकर) दीप क्या कर रहे हो ?

दीप - बस अंकल बोर हो रहा हूँ। आइये न अंकल ! बैठिये।

उत्सव- तो चलो आज आपको मैं तुम्हें एक जादू दिखाता हूँ।

दीप - कैसा जादू अंकल ?

उत्सव- बेटा मैं जलती हुई मोमबत्ती के ऊपर तुम्हारा हाथ रखूँगा और तुम्हारा हाथ जलेगा नहीं।

दीप - ऐसे कैसे हो सकता है अंकल ? मैं अपना हाथ मोमबत्ती पर नहीं रखूँगा।

उत्सव- क्यों बेटा ?

दीप - मैं जल जाऊँगा।

उत्सव- वाह बेटा ! तुम्हें अपने जलने का तो डर है परन्तु उन छोटे-छोटे जीवों को जलाकर मार डालना चाहते हो ?

दीप - मैं कुछ समझा नहीं अंकल !

उत्सव- अरे तुमने अपने पापा से पटाखे लाने की जिद की थी और तुमने कल शाम से भोजन भी नहीं किया।

दीप - हाँ लेकिन मैं दीपावली पर एन्जॉय करना चाहता हूँ। मेरे दोस्त ढेर सारे पटाखे लाये हैं।

उत्सव- किसी की हत्या करके आनंद लेना चाहते हो। तुम्हारे थोड़े से आनंद के लिये जलाये गये पटाखों की आग और आवाज असंख्यात जीवों की मौत बनकर आयेगी और क्या यदि तुम्हारे दोस्त चोरी करेंगे तो क्या तुम भी चोरी करोगे ?

दीप - नहीं अंकल, लेकिन दीपावली का पर्व तो हमारे भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव है तो क्या हम खुशियाँ न मनायें ?

उत्सव- मैंने कब मना किया। दीवाली मनाओ लेकिन दूसरे तरीके से। जैसे गौतम गणधर ने दीपावली मनाई थी। मतलब हम इस दिन भगवान महावीर की पूजन करें, उनकी शिक्षाओं का अध्ययन करें। तुम्हारा नाम तो दीप है। ऐसा कार्य करो जिससे लोगों को प्रकाश मिले अंधेरा नहीं। तुम्हारा पटाखों का आनंद अनंत निर्दोष जीवों का मौत का कारण क्यों बने ? अच्छा यह बताओ कि पटाखे फोड़ने से कौन सा लाभ है ?

दीप - (कुछ देर सोचकर) कुछ भी नहीं।

उत्सव- जब जिस कार्य में लाभ ही नहीं तो ऐसा कार्य क्यों करना और जिस काम में हानि ही हानि हो वह काम तो कभी नहीं करना। पटाखों से लोग जल जाते हैं, घरों में आग लग जाती है, बच्चे-बड़े अपंग हो जाते हैं और... अरबों रुपयों की सामग्री जलकर राख बन जाती है।

दीप - बस बस अंकल मैं समझ गया। अब मैं पटाखे कभी नहीं फोड़ूँगा।

उत्सव - वाह ये हुई न बात। हम ज्ञान की दीपावली मनायेंगे।

-विराग शास्त्री

बच्चों, बड़ों से यही पुकार, करो पटाखों का बहिष्कार

क्या पटाखे फोड़कर आप अहिंसा व दया धर्म का पालन कर पायेंगे ?

क्या पटाखे फोड़कर आप मानवता को कायम रख पायेंगे ?

जरा सोचिये - पटाखे फोड़ने से क्या मिला ?

- भगवान एवं संतों की वाणी का अपमान
- शारीरिक क्षति एवं जन हानि
- वायु प्रदूषण की अधिकता
- आँखों एवं स्वास्थ्य पर बुरा असर
- करोड़ों की सम्पत्ति का नुकसान
- अनंत पाप का बंध
- गंदगी का साम्राज्य
- धन की बर्बादी
- अनंत निर्दोष जीवों की हत्या
- समय की बर्बादी

अतः जियो और जीने दो का अमर संदेश देने वाले भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर हिंसा का तांडव मत करिये राम, बुध्द, नानक एवं संतों - महापुरुषों के अहिंसा संदेश का पालन कीजिए । सुख शांति के पर्व दीपावली पर अन्य जीवों के यमराज न बनें ।

- क्षणिक मनोरंजन के लिए अनंत जीवों की हत्या क्यों ?
- हमें बम विस्फोट में मरने वाले व्यक्तियों से सहानुभूति होती है तो फिर अनंत जीवों को पटाखों रूपी बम विस्फोट से मारने जैसी निर्दयता क्यों ?
- हमें तो अग्नि की आंच भी सहन नहीं होती और हम निर्दोष जीवों को जला डालते हैं । छोटी सी आवाज से हमारे बच्चे डर जाते हैं तो बम के धमाकों से अनंत जीवों को मौत के घाट उतरते देख कर हमारे हाथ क्यों नहीं कांपते ?

यह हिंसा के यमराज का नहीं, अहिंसा के सम्राट के निर्वाण का महापर्व है ।

जरा सोचिये - प्रतिवर्ष पटाखों से 2 लाख लोग अपंग, पटाखों की आग से देश में प्रतिवर्ष 200 करोड की सम्पत्ति का नुकसान, पटाखों से प्रतिवर्ष 70,000 बच्चों की आंखों की रोशनी कम या समाप्त, पटाखा फैक्ट्री में सैकड़ों कर्मचारियों की घटनाओं में मृत्यु हो जाती है ।

जीव रक्षा दया धर्म — अहिंसा विश्व धर्म की जय — महापुरुषों का यही संदेश, जियो और जीने दो

चहकती चेतना

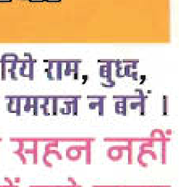

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

सदस्यता शुल्क - 250/- (तीन वर्ष हेतु)

प्रकाशक :- आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि.

सर्वोदय 702, फूटाताल, जबलपुर मो. : 09827343205, 9300642434

THREE JEWELS OF JAINISM

Daughter : Ma, What are jain religious practices ?

Mother : jain religious practices are Deva-puja (worship of jina) Svadhyaya (study of scriptures), Sanyam (practice of self control), Tapa (penance) and Dana (Charity). We Jainas should practise these six essentials daily. these are essentially performed by the Jainas, so these are known as "Essentials".

Daughter : Ma, my friends ask that if the frue practice of Ahimsa and Satya lies in living our daily lives, then why go to temple and why pray and worship ?

Mother : Oh my child, our idols of Tirthankaras in the temples remind us of the nature of Reality. They inspire us to make spiritual progress. During worship , we are happy and elaxed, we enjoy peace of mind.

Son : What is Deva-Puja and how can we do it ?

Mother : Worship or prayer of supreme souls in Deva-Puja. Superme souls are Arihantas and Siddhas. Jainas worship or pray before the idols of Tirthankaras (the superme souls). the procedure of prayer or worship (Puja -vidhi) has been outlined in religious books. While we are doing Puja. we remember the virtues of Supreme Souls. we recite their virtues and we bow down before their idols with deep devotion. During the Puja, we should have good thought and feelings.

Daughter : What do we mean by Guru- Upasti ?

Mother : All those monks who practise the teachings of Jaina religion are spiritual Gurus. We Jainas should achieve proximity or nearness with the Guru and always feel their presence in our lives with respect. this is called Guru-Upasti. Our spiritua .. Gurus have control over their passions and preach the teachings of religion through practices. Thus, Gurus are spiritually ahead of the house-holders.

Daughter : Ma, What do we mean by Sastra-Svadhyaya ?

Mother : The study of scriptures preacher by " Jina" is Sastra Svadhyaya. We Jainas should study the scriptures and religious books daily. Its purpose is to enrich the knowledge of the right path; to practise and compassion to all; and to refine our moral and spiritual efforts. Svadhyaya is also helpful for educating our youngsters, friends and others.

Son : Ma, How can a house-holder practise self-control ?

Mother : Self control means not having bad thoughts, anger, greed, jealousy or hatred. So, we Jainas should practise self Wanglessness should be our goal of life. We should minimise our desires and passions and regulate our daily necessities crimes. We should control our diet and other worldly pleasures. self control gives us self-satisfaction and inner fulfillment .

Daughter : What do we mean by Tapa ?

Mother : Tapa or penance is a control on desires. it disintegrates our karmas of bad deeds and induces us to dissociate from bad habits. Penance gives us silf-confidence and develops our will- power to do good. so, we Jainas should perfrom some penance every day. Penance can be external like fasting (Upavasa) and internal like reverence (Vinaya), meditation etc.

Daugher : What is charity in Jainism ?

Mother : All religions highly praise the virtue of the charity or donation. Every body agrees that helping others in cash or kind is admirable. In Jainism, charity or donation is Dana, which means giving one's wealth for mutual benefits. so, the donation to poor and needy persons should be with compassion and to the monks with reverence. A donor should not have any desire for material gains from the donations and should draw joy in giving . Actually, charity is self - sacrifice. in Jainism charity is of four kinds- donation of food (Ahara-dana); donation of medicine (Ausadha-dana) donation of books or education (Jnana dana) and giving protection or freedom from fear (Abhaya-dana or Avasa-dana).

My Child, by proper practice of six essentials, we improve our faith and knowledge. It makes us a better individual. It helps us to love all and serve all .

Presented by : Ku. Sudha Jain, Chhindwara

Prayer

I don't deny your existence,
I just ask to clear my conscience.
If I can't see it in any sense,
How do I believe its existence ?
People keep talking of soul-soul.
I don't see any such soul-foul.
Never did I see it so far O Father !
At least a glimse today I desire.
Rough, Smooth, Cold or Hot,
Bitter, Sweet, Hard of Soft ?
We have heard and we sure know,
You know the soul, we want to know !

चित्र देखो - कहानी लिखो

Look this Picture & Write Story

अंतिम तिथि - 25 अक्टूबर 2007

इस चित्र को ध्यान से देखें और एक सुंदर सी कहानी लिखकर भेजें। ध्यान रहे कहानी मौलिक (स्वयं के द्वारा लिखी हुई) धार्मिक, जैन सिद्धांतों की या किसी शिक्षा को बताने वाली होना चाहिए। शब्द सीमा अधिकतम 150 हो। कहानी सुंदर लिखावट अथवा टाइप की हुई (हिन्दी, अंग्रेजी या गुजराती) में होना चाहिए। सर्वोत्कृष्ट कहानी को पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा एवं उसे पुरुस्कृत किया जायेगा।

हमारा पता है :

कहानी विभाग, सर्वोदय 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.)

ये है पुरुस्कृत कहानी

एक बार एक आचार्य अपने संघ सहित दूसरे नगर के लिये विहार कर रहे थे। उनके संघ में युवा मुनिराजों के अलावा एक वृद्ध मुनिराज भी थे। उनका स्वास्थ्य निरंतर खराब हो रहा था। उनके स्वास्थ्य को देखकर आचार्य ने संघ को वहीं जंगल में रुकने का आदेश दिया। वे वृद्ध मुनि के पास आकर बोले - हे आचार्य ! अब मेरे स्वास्थ्य की स्थिति अच्छी नहीं है। मुझसे अब चला नहीं जाता। मुझे समाधिमरण के परिणाम हो रहे हैं। आचार्य ने मुनि की अवस्था जानकर उन्हें भूमि पर लिटा दिया। वे वृद्ध मुनि बोले - आचार्य मेरा गला सूख गया है। अत्यन्त गर्मी का अनुभव हो रहा है। ऐसा सुनकर आचार्य बोले - शिष्य ! अपनी आत्मा तो समस्त गर्मी, ठंड आदि से दूर है। जिसे गर्मी का अनुभव हो रहा है वह तुम नहीं हो वह तो शरीर है तुम तो त्रिकाली आत्मा हो। पानी से एक क्षण की आकुलता शांति होगी। अपनी आत्मा के वैभव का रसपान करो। ऐसा सुनकर मुनिराज को दृढ़ता आयी। समय-समय पर संघ के अन्य मुनियों ने उन्हें सम्बोधन दिया और शांत परिणामों से समाधिमरण पूर्वक उनका देह वियोग हो गया।

जयकुमार जैन, भिलाई (छत्तीसगढ़)

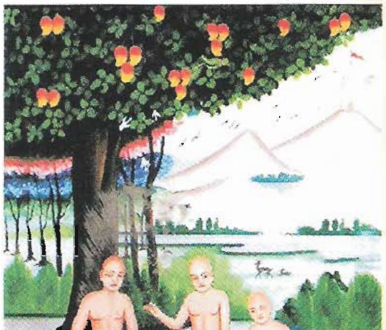

पिछले अंक में हमने आपको इस चित्र के आधार पर कहानी लिखने की प्रेरणा दी थी। उसके जवाब में अनेक बच्चों ने कहानियाँ लिखकर भेजीं।

इनकी कहानियाँ भी सराहनीय रहीं -

1. चिन्मय जैन, दिल्ली
2. रेखा जैन, मुगलसराय
3. सानिध्य जैन, अहमदाबाद

महात्मा बुद्ध ने दिगम्बर दीक्षा ली थी।

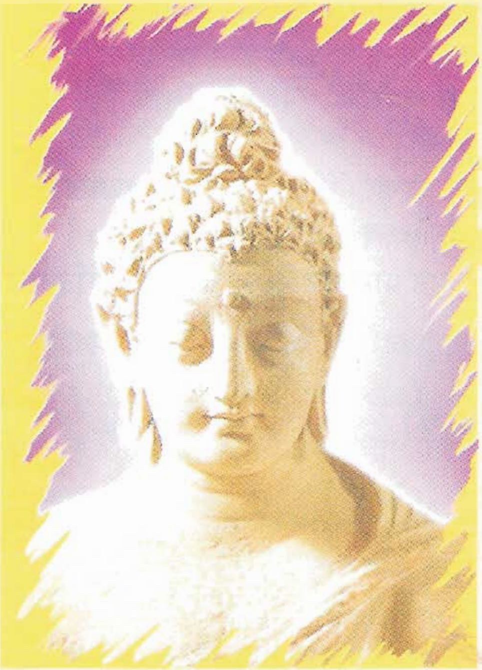

'मज्झिमनिकाय सुत्त पिटक' में बुद्ध ने स्वीकार किया है कि मैनें दिगम्बर दीक्षा ली थी। जैन शास्त्रों में इनका नाम पिहिताश्रव मुनि मिलता है। कठोर साधना होने से उसे छोड़कर फिर उन्होनें मध्यम मार्ग चलाया था। उन्होनें लिखा - ''सारिपुत्र ! मेरी यह तपस्विता थी, मैं अचेलक (नग्न) था, मुक्ताचार (हाथ में भिक्षा लेकर खाने वाला), ठहरिये कहकर या बुलाकर दी भिक्षा का त्यागी, मेरे निमित्त की भिक्षा और अन्नादि का त्यागी था, मैं एक ही घर भिक्षा लेने वाला होता था। मैं केश-दाढ़ी नोंचने वाला था। ऐसे अनेक प्रकार के आतापन, सन्तापन के व्यापार में नग्न होकर मैं विहार करता था।''

सम्यक् सम्बुद्ध से साभार

सर्वोदय जन्म दिवस उपहार योजना

नाम :........................ पिता का नाम ....

जन्मतिथि.................. पता ....

....

फोन नं. .... मो. ....

पिन कोड...............

1 वर्षीय सदस्यता राशि 200/-

हमारा पता - सर्वोदय, 702 जैन टेलीकॉम, फूटाताल-जबलपुर (म.प्र.)

200/- रु. के साथ यह फार्म भरकर भेजिये और पाइये अपने जन्म-दिवस पर धार्मिक शुभ-कामनाओं के साथ आकर्षक उपहार बालगीत सी.डी. एवं सुंदर ग्रीटिंग

इन्हें भी जानिए

1. आचार्य कुन्दकुन्द विदेह क्षेत्र में सात दिन तक पाँच सौ धनुष ऊँचे सीमंधर भगवान को देखते रहे, जिससे उनकी गर्दन टेढ़ी हो गई थी, इस कारण उनका नाम वक्रगीव पड़ा।
2. आचार्य कुन्दकुन्द का पूर्व भव का मित्र जो देव बन गया था, वह उन्हें विदेह क्षेत्र ले गया था।
3. विदेह क्षेत्र में आचार्य कुन्दकुन्द आठ दिन रहे परन्तु उन्होंने वहाँ आहार नहीं लिया क्योंकि यहाँ रात, वहाँ दिन और वहाँ दिन, यहाँ रात होती थी।
4. तीर्थंकर के दाढ़ी मूंछ के बाल नहीं होते, सिर पर बाल होते हैं उनके शरीर में 1008 उत्तम चिन्ह होते हैं।
5. 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथजी ने मात्र 6 दिन की तपस्या में केवलज्ञान प्राप्त कर लिया था और आदिनाथ भगवान ने 1000 वर्ष तप करके केवलज्ञान प्राप्त किया।
6. जीवंधर स्वामी का जन्म श्मशान में हुआ था।
7. इस काल में सबसे अंत में मोक्ष में जाने वाले केवली श्रीधर स्वामी थे।
8. आचार्य भद्रबाहु के समय में श्वेताम्बर मत का प्रारंभ हुआ।
9. रावण का दामाद राजा मधु ऐसे व्यक्ति थे जिनको युद्ध में हाथी पर बैठे ही वैराग्य हो गया था।
10. दिगम्बर वैदिक मत मे परमहंस साधु सबसे उत्कृष्ट साधु माने जाते हैं वे नग्न रहा करते थे।
11. मुसलमानों में भी अनेक सबसे ऊँची श्रेणी के फकीर बिल्कुल नग्न रहा करते थे।
12. तीर्थंकर की माता के एक ही संतान होती है।

श्रेयांश शास्त्री, जबलपुर

अहिंसा अभियान में शामिल हों - पटाखा विरोधी पोस्टर मंगायें -

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी अहिंसा अभियान चलाया जा रहा है। भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव/ दीपावली के दिन पटाखों से होने वाली हिंसा और अन्य हानियों से अवगत कराने हेतु विगत सात वर्षों से अहिंसा अभियान चलाया जा रहा है। इसके अतंर्गत एक रंगीन पोस्टर प्रकाशित किया जा रहा है। साथ ही फ्लेक्स भी बनवाये जा रहे हैं। आपसे निवेदन है कि आप भी अपनी आवश्यकता अनुसार पोस्टर और फ्लेक्स मंगाकर अहिंसा अभियान का संचालन करें। आप ये पोस्टर दुकानों, सार्वजनिक स्थानों, विद्यालयों आदि स्थानों पर लगाकर जीवों की रक्षा में निमित्त बन सकते हैं। 100 या इससे अधिक पोस्टर के आर्डर पर आपकी भावनानुसार नाम प्रकाशित किया जायेगा। आप प्रति पोस्टर 4/- रू. एवं प्रति फ्लेक्स 100/- (3 X 2 फुट) मूल्य के अनुसार सर्वोदय ज्ञानपीठ जबलपुर के नाम ड्राफ्ट/चेक/मनीआर्डर भेज कर फ्लेक्स और पोस्टर मंगा सकते हैं।

जैनधर्म की ए, बी, सी

1. आकाश में बहुत सारे तारे हैं,
जिसकी गिनती मैं कभी नहीं कर सकता,
सागर की गहराई को कौन नाप सकता है,
इसी तरह अनंतनाथ भगवान आपका वैभव है।

2. धर्मनाथ जी आप मेरे कर्मों का नाश करो,
आप ही तो धर्म के प्रचारक हो,
हे तीन लोक के नाथ भगवान आप आओ,
मैं आपका इंतजार कर रहा हूँ।

3. मैं एक पिंजरे में बंद पक्षी हूँ,
जिसमें मुझे मेरी तस्वीर दिखाई नहीं देती,
अरहनाथजी मैंने आपको ही लक्ष्य बनाया है,
जिससे मुझे मोक्ष की प्राप्ति हो जाए।

4. आप ऐरा देवी जी के प्यारे पुत्र हैं,
आप मुझे शान्ति और सहनशीलता दीजिये,
इस संसार में मेरा कोई भी नहीं है,
शांतिनाथ भगवान आप ही बस मेरे हैं।

ABC of Jain Dharama

1. So many stars are in the sky,
Counting every can't try.
ocean i can not measure.
Such is ANANTNATH'S treasure.

2. DHARAMNATH Ji kill my karma,
you are preacher of dharma,
come on my lord almighty,
Waiting for you eagerly.

3. I am carrying bird in cage,
I can not see my image,
Shri ARAHNATH my ambition,
I get final libertion.

4. Aairadevis lovely son,
Give me peace Compassion,
In the world my own is none,
SHANTINATH is only one.

फूलों से भरे गुलशन वीरान हो गये।
गंदे उपन्यास आज पुराण हो गये॥
आज कोई मंदिर ही जाना नहीं चाहता
फिल्मी कलाकार आज भगवान हो गये॥

Reproduce this picture in the Columns given below.

नीचे दिये खंडों की सहायता से चित्र बनाये।

एक था चूहा बड़ा शैतान, करता था सबको परेशान।
फुदक फुदक कर उधम मचाता, सबको आगे पीछे नचाता ॥
जिनमंदिर में पहुंचा वो एक दिन, पाकर श्री जिनवर के दर्शन।
शांत छवि प्रभु हृदय समाई, उधम न करता अब वो भाई ॥

आप किसी भी धार्मिक विषय पर पेंटिंग हमें भेजिये। चयन होने पर उसे यहां प्रकाशित किया जावेगा।

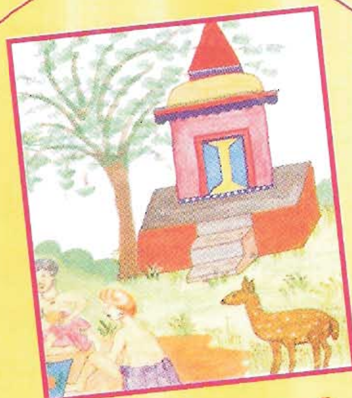

महक जैन, मुम्बई

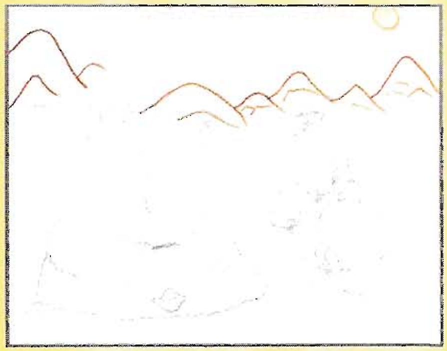

अनिमेष जैन, अशोकनगर

सानिध्य जैन, सनावद

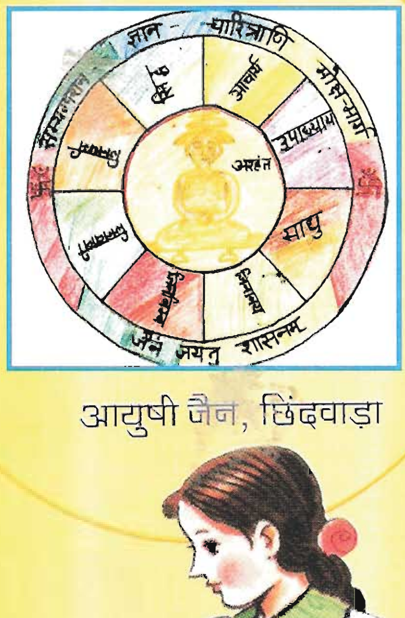

आयुषी जैन, छिंदवाड़ा

आपकी चित्रकला

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे।

1. दिगम्बर जिन प्रतिमा का दांया हाथ ऊपर रहता है या बांया ?

कान्तादेवी कासलीवाल

उत्तर - दिगम्बर जिन प्रतिमा का हमेशा दांया हाथ ऊपर रहता है।

2. जल को उबालने से जलकायिक जीवों की हिंसा का पाप नहीं लगता ?

राजकुमार जैन, टीकमगढ़

उत्तर - गृहस्थ एकेन्द्रिय हिंसा से नहीं बच सकता। आरंभी हिंसा का पाप लगता ही है।

3. क्या आर्यिका को दीक्षा के समय आचार्य आर्यिका का केश लोच स्वयं अपने हाथ से कर सकते हैं ?

भाग चंद जैन

उत्तर - प्रथमानुयोग व आगम में गणिनी आर्यिका ही आर्यिका को दीक्षा दे सकती है।

4. क्या अंधेरे कमरे में लाइट जलाकर भोजन कर सकते हैं ?

निधि जैन, बुलढाणा

उत्तर - भोजन प्राकृतिक प्रकाश में ही करना चाहिए।

5. दही अभक्ष्य है या भक्ष्य ?

श्रीमति संध्या जैन, बरगी

उत्तर - उबाले हुये दूध से जमाया हुआ दही 24 घंटे तक खाने योग्य है। कच्चे दूध का जमाया हुआ दही अभक्ष्य है, वह जीवों का समूह है।

6. पट्ट शिष्य का क्या अर्थ है ?

वीरचंद कासलीवाल, भोपाल

उत्तर - आचार्य ने अपना पद जिस शिष्य को दिया हो, वह पट्ट शिष्य कहलाता है।

बीतने वाली घड़ी को कौन लौटा पायेगा।
इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा ।।
जिंदगी भर का कमाया साथ में क्या जायेगा।
यह सु अवसर खो दिया तो अंत में पछतायेगा ।।

बाल एवं युवा वर्ग के लिये अनुपम उपहार

मेरा वीर बनेगा बेटा

बाल वीडियो का तीसरा पुष्प
निर्देशन : विराग शास्त्री, जबलपुर
प्राप्ति स्थान :
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.)

इससे पूर्व आपने पढ़ा कि शुभचन्द्र और भर्तृहरि ने दीक्षा ली। भतृहरि ने मिथ्यातप कर ताबें से सोना बनाने वाला रस बनाया और अपने भाई दिगम्बर मुनिराज शुभचन्द्र को गरीब जानकर वह रस भेजा परन्तु शुभचन्द्र ने वह रस पत्थर पर फिकवा दिया अब आगे ....

पिछले अंक से आगे

सच्ची तपस्या

- प्रस्तुति : विवेक जैन

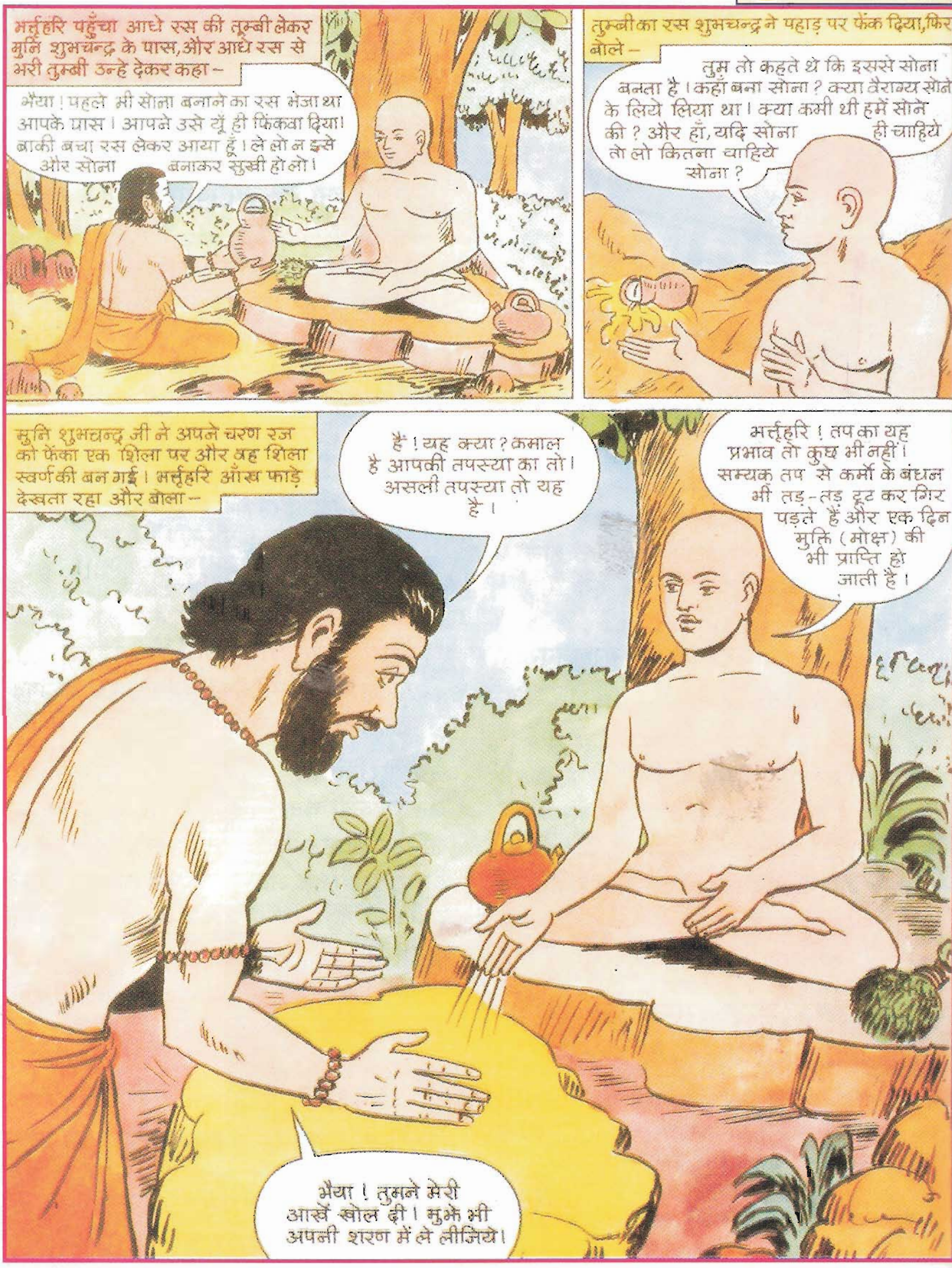

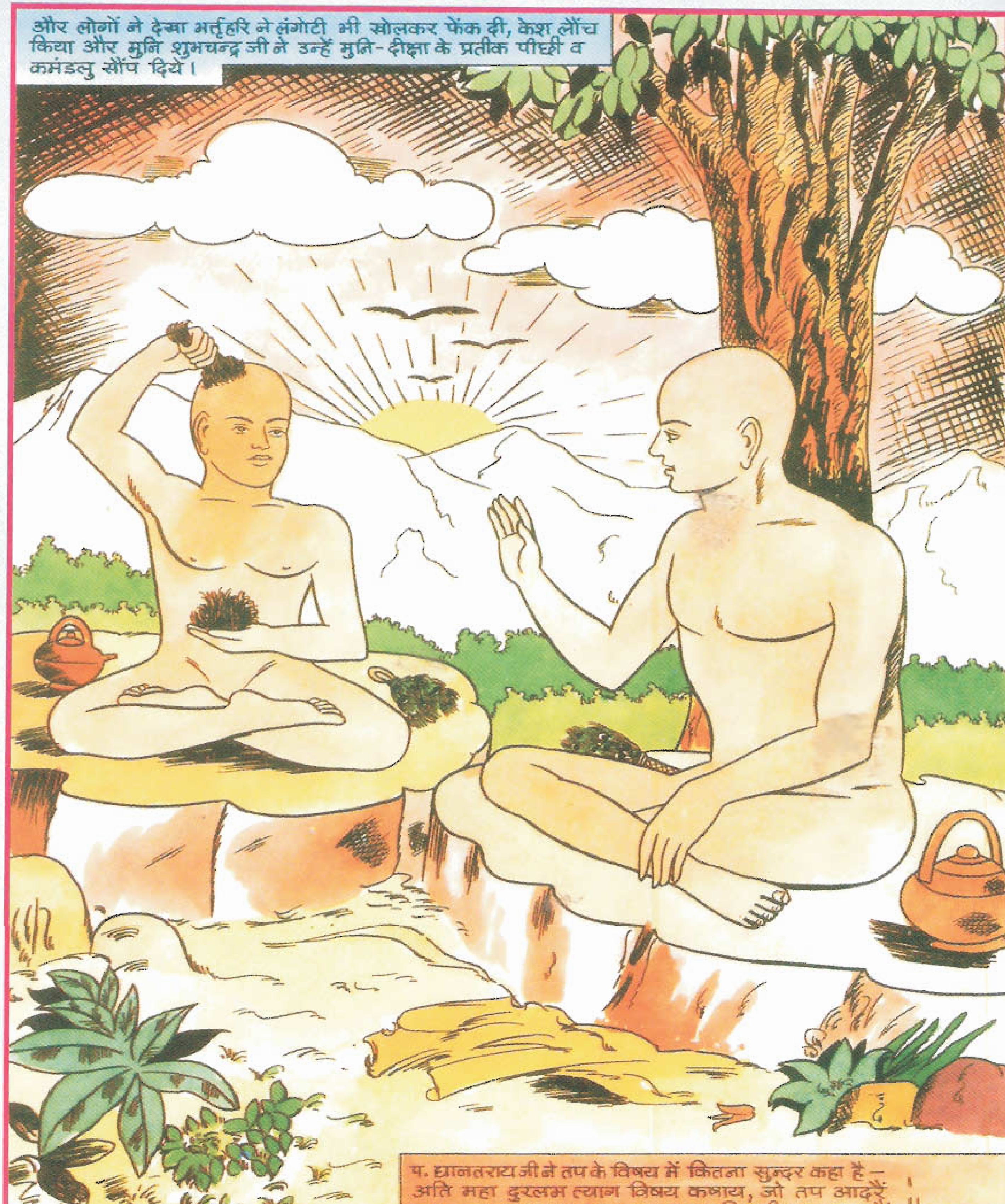
और लोगों ने देखा भर्तृहरि ने लंगोटी भी खोलकर फेंक दी, केश लौंच किया और मुनि शुभचन्द्र जी ने उन्हें मुनि-दीक्षा के प्रतीक पीछी व कमंडलु सौंप दिये।
प. द्यानतराय जी ने तप के विषय में कितना सुन्दर कहा है —
अति महा दुरलभ त्याग विषय कषाय, जो तप आदरैं ।
नर भव अनुपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरैं ॥